

हमें यह जानना चाहिए कि हम जिसके अधीन हो रहे हैं वो कौन है। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे व्यक्ति अल्लाह के साथ संबंध स्थापित कर सकता है। इसके अलावा, अल्लाह के करीब रहने से हमें उन अपरहार्य पीड़ाओं और दुखों का मुकाबला करने में मदद मिलेगी जो जीवित रहने का हिसा हैं। हम केवल तीन तरीके देखेंगे जिनसे व्यक्ति अल्लाह के करीब पहुंच सकता है और दुख और तनाव के समय का सामना कर सकता है।

अल्लाह को उसके सबसे खूबसूरत नामों से पुकारना

मुसलमानों को हर समय अल्लाह को याद करने और उनके प्रति आभारी रहने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, हालांकि यह विशेष रूप से उनके लिए फायदेमंद हो सकता है जो नरिशा की गहराई में खो जाता है या यहां तक कि दिन या सप्ताह में हल्का तनाव महसूस करता है। हमें अल्लाह के सुंदर नामों को जानने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और इस प्रकार हम अपने निर्माता को जान सकते हैं और अपनी आवश्यकतानुसार उन नामों से पुकार सकते हैं।

पैगंबर मुहम्मद ने हमें अल्लाह को उसके सबसे खूबसूरत नामों से पुकारने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपनी खुद की प्रार्थनाओं में कहा, "ऐ अल्लाह, मैं आपसे हर उस नाम से मांगता हूँ जैसे आपने अपने लिए रखा है, या जैसे आपने अपनी पुस्तक में प्रकट किया है, या जैसे आपने अपनी किसी भी रचना को सखाया है, या जैसे आपने अपने अदृश्य ज्ञान में छिपा रखा है।"^[1]

“वही अल्लाह है, नहीं है कोई वंदनीय (पूज्य) परन्तु वही है। उसी के उत्तम नाम है।” (क़ुरआन 20:8)

“और अल्लाह ही के शुभ नाम है, अतः उसे उन्हीं के द्वारा पुकारो ...” (क़ुरआन 7:180)

अल्लाह के नाम का जाप करने से बड़ी राहत मिलती है। यह हमें उनकी महानता का एहसास कराता है और हमारे विश्वास को बढ़ाता है। यह हमें शांत और धैर्यवान रहने पर ध्यान केंद्रित करने में भी मदद करता है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि यदि किसी आसक्ति को दुख और पीड़ा में हताश या तनाव और समस्याओं के बारे में शिकायत न करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, उसे प्रोत्साहित किया जाता है कि वह अल्लाह की ओर मुड़े, उनसे प्रार्थना करें और उनसे राहत मांगें। जरूरत के अनुरूप अल्लाह के नामों का उपयोग करना भी एक सराहनीय और शांत करने वाला कार्य है।

हर मौके पर दुआ मांगना

यदि कोई व्यक्ति व्यथित महसूस कर रहा है तो यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अल्लाह करीब है और उस तक पहुंचने का एक प्रभावी तरीका दुआ करना है। जब कोई परम दयालु को पुकारता है, तो वह (अल्लाह)

उत्तर देता है। "जब मेरे भक्त मेरे वषिय में आपसे प्रश्न करें, तो उन्हें बता दें कनिश्चय मैं समीप हूं। मैं प्रार्थी की प्रार्थना का उत्तर देता हूं। अतः, उन्हें भी चाहिये कि मेरे आज्ञाकारी बनें तथा मुझपर विश्वास रखें, ताकि वे सीधी राह पायें।" (कुरआन 2:186)

पैगंबर मोहम्मद ने अपने अनुयायियों को विशेष रूप से उन लोगों के लिए एक दुआ सखाई जो दुखी और व्यथित महसूस करते हैं।

“ऐसा कोई भी नहीं है जो संकट और दुख से न पीड़ित हो, और कहे: अल्लाहुम्मा इना अब्दुका, इब्नु अब्दिका, इब्नु अमातिका, नासयिता बि-यदिका, माजनि फयिया हुकुमका, अदलुन फयिया कदा-उका अस-अलुका बी कुली इस्मनि हुआ लका सम्मैता बही नफ्सका, औ अंजलतहु फी कतिबिका औ अल्लमतहु अहदन मनि खलकिका औ इस्ता-तहरता बही फि इल्मलि-गैबी' इंदका, 'अन-तज- 'अलल-कुरआना रबी' अ कल्बी व नूर सदरी व जला हुजनी वा जहाबा हम्मी (ऐ अल्लाह यकीनन मैं तेरा बन्दा हु और तेरे ही बन्दे और तेरी बन्दी की औलाद हूं। मेरी परेशानी तेरे ही हाथ में है। मुझमें तेरा ही हुक्म जारी है। मेरे बारे में तेरा फैसला न्यायसंगत है। मैं तेरे हर उस खास नाम के जरिये से तुझसे दरख्वास्त करता हु जो तूने खुद अपना नाम रखा है या उसे अपनी कतिब में नाजलि फरमाया है या अपनी मखलुक में से कसिकों सखाया है या तूने इसे इल्मे गैब में अपने पास (रखने को) खास कया है (मैं दरख्वास्त करता हु) के तु कुरआन मेरे दिलि की बहार बना दे। और मेरे सीने का नूर, मेरे गमो का इलाज और मेरे संकट को दूर करने वाला।) और अल्लाह उसके संकट और दुख को दूर करके उसे खुशी से बदल दे।" उनसे पूछा गया: "अल्लाह के दूत, क्या हमें यह सीखना चाहिए?" उन्होंने कहा: "बेशक; जो कोई भी इसे सुने, उसे ये सीखना चाहिए।"[\[2\]](#)

दुआ विश्वास को बढ़ाती है, व्यथित को आशा और राहत देती है और प्रार्थना करने वाले को नरिशा और अलगाव से बचाती है। ईमानदारी से दुआ करना वास्तव में एक ऐसा हथियार है जो सबसे गंभीर तनाव और दुख से भी लड़ सकता है। ऐसे अनगणित अवसर हैं जब पैगंबरों और हमारे नेक पूर्वजों ने दुआ की है और अल्लाह ने उन्हें खतरे, वपित्तिया दर्द से बचाया।

इस दुनिया के जीवन की वास्तविकता को समझना

अक्सर हमें अपने कार्यों के कारण दुर्भाग्य, दर्द और पीड़ा होती है। हम पाप करते हैं, लेकिन अल्लाह हमें धन, स्वास्थ्य या जनि चीजों से हम प्यार करते हैं, उनके द्वारा हानि से शुद्ध करते हैं। कभी-कभी इस दुनिया का दुख, अगले जन्म में दुख की भरपाई करता है; कभी-कभी सारे दर्द और संकट का मतलब है कि हम स्वर्ग में एक उच्च पद प्राप्त करेंगे।

बुरे लोगों के साथ अच्छा क्यों होती है, या अच्छे लोगों के साथ बुरा क्यों होता है, इसके पीछे की परम ज्ञान अल्लाह ही जानता है। सामान्य तौर पर, जो कुछ भी अल्लाह की ओर मुड़ने का कारण बनता है वह अच्छा है। संकट के समय लोग अल्लाह के करीब आते हैं। अल्लाह प्रदाता है और वह सबसे उदार है। वह हमें अनन्त जीवन का पुरस्कार देना चाहता है और अगर दर्द और पीड़ा हमें स्वर्ग के करीब लाती है, तो खराब स्वास्थ्य और चोट एक आशीर्वाद है। पैगंबर मुहम्मद ने कहा, "अगर अल्लाह किसी के लिए अच्छा करना चाहता है, तो वह उसे परीक्षणों से पीड़ित करता है।"^[3]

फुटनोट:

[1] ????? ????

[2] ????? ????

[3] ????? ??-???????

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/161>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।